सरदार सरोवर जलाशय के मत्स्य प्रबंधन योजना पर हितधारक परामर्श बैठक, केवड़िया गांव, गुजरात – 27 जुलाई, 2025

भा. कृ. अनु. प- केंद्रीय मात्यिकी शिक्षा संस्थान (CIFE), मुंबई द्वारा "महाराष्ट्र भाग के सरदार सरोवर जलाशय की पारिस्थितिक स्थिति, संरक्षण एवं मत्स्य संवर्धन पर अनुसंधान" विषयक परामर्शी परियोजना के अंतर्गत, मत्स्य विभाग, महाराष्ट्र के सहयोग से 27 जुलाई, 2025 को केवड़िया, गुजरात में सरदार सरोवर जलाशय के मत्स्य प्रबंधन पर हितधारक परामर्श का आयोजन किया गया। यह परामर्श बैठक जलाशय के मत्स्य संसाधनों के सतत विकास एवं प्रभावी प्रबंधन के लिए समर्पित प्रमुख हितधारकों को एक मंच पर लाने का अवसर बनी। इस परामर्श का मुख्य उद्देश्य नीतिगत ढाँचे, वैज्ञानिक प्रबंधन पद्धतियों, तकनीकी नवाचारों और सहकारी सहभागिता पर संवाद शुरू करना था ताकि मत्स्य उत्पादन बढ़ाया जा सके और जलाशय पर आश्रित मत्स्यजीवियों की आजीविका में सुधार हो सके।

कार्यक्रम की शुरुआत मत्स्य विभाग, महाराष्ट्र शासन के संयुक्त आयुक्त श्री. भदुले के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने भा. कृ. अनु. प- केंद्रीय मात्यिकी शिक्षा संस्थान (CIFE), मुंबई की समावेशी, शोध-आधारित एवं सतत अंतर्देशीय मत्स्य विकास के प्रति अटूट प्रतिबद्धता पर बल दिया। साथ ही उन्होंने महाराष्ट्र राज्य मत्स्य विभाग की सरदार सरोवर जलाशय क्षेत्र में मत्स्य एवं संबद्ध क्षेत्रों के समग्र विकास के प्रति निष्ठा को भी रेखांकित किया।

इसके उपरांत, परियोजना के प्रधान अन्वेषक एवं आईसीएआर–सीआईएफई, मुंबई के मत्स्य पालन विभाग के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुखम मुनिलकुमार के उद्घाटन उद्बोधन हुआ। उन्होंने जलाशय मत्स्यिकी के समग्र विकास में सहकारी मॉडल और सहयोगी नीतियों की अहम भूमिका पर जोर दिया। डॉ. मुनिलकुमार ने परियोजना अवधि में किए गए अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष प्रस्तुत किए और प्रजाति वितरण, प्रचुरता, कुल भंडार आकलन, मत्स्य प्रयास तथा अधिकतम सतत उपज से संबंधित अवलोकनों का विस्तृत विवरण दिया। उन्होंने सहकारी समितियों के सदस्यों के साथ जाल की जाली (mesh size) के नियमन और मछली पकड़ने पर प्रतिबंध काल जैसे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रबंधन मुद्दों पर भी चर्चा की।

नंदुरबार के मत्स्य विकास अधिकारी श्री. किरण पाडवी ने सरदार सरोवर जलाशय के आसपास चल रही विभिन्न विकासात्मक पहलों पर प्रकाश डाला। उन्होंने मछली पकड़ने वाली नौकाओं के उन्नयन, शीत श्रृंखला (cold chain) के लिए आइस प्लांट की स्थापना तथा बहु–प्रजाति फिनफिश हैचरी विकसित करने की तात्कालिक आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि गुणवत्तापूर्ण बीज की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सरदार सरोवर जलाशय मत्स्य के लिए समर्पित मछली संग्रहण एवं विपणन केंद्र स्थापित करने के महत्व पर भी बल दिया, जिससे स्थानीय मत्स्यजीवियों के लिए बाजार तक बेहतर पहुँच और आय के अवसर बढ़ेंगे।

सीआईएफई, मुंबई के मत्स्य विस्तार, अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी विभाग की अध्यक्ष डॉ. अर्पिता शर्मा ने सरदार सरोवर जलाशय पर आश्रित मत्स्यजीवी परिवारों के सामाजिक-आर्थिक पहलुओं को प्रस्तुत किया तथा मत्स्य उत्पादन एवं आजीविका की मजबूती बढ़ाने हेतु सहयोगात्मक अवसरों की खोज की। इस परामर्श में 70 मत्स्य किसानों ने भाग लिया, जिनमें 20 मत्स्य सहकारी समितियों के प्रतिनिधि शामिल थे। यह व्यापक जनसहभागिता तथा जलाशय प्रबंधन में सहभागी निर्णय लेने की महत्ता का प्रतीक था।

आईसीएआर–सीआईएफई, मुंबई के मत्स्य संसाधन प्रबंधन विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं सह-अन्वेषक डॉ. करण रामटेके ने सरदार सरोवर जलाशय की वर्तमान मत्स्य भंडार स्थिति और दोहन क्षमता का अवलोकन प्रस्तुत किया, जिससे संसाधन आधार और उसके सतत उपयोग पर उपयोगी जानकारी मिली। तत्पश्चात, आईसीएआर–सीआईएफई, मुंबई के मत्स्य पालन विभाग के वैज्ञानिक एवं सह-अन्वेषक डॉ. कपिल सुखधाने ने मत्स्य प्रबंधन योजना की भावी दिशाओं एवं रणनीतिक ढाँचे पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनकी प्रस्तुति सभी सहकारी प्रतिनिधियों के समक्ष इस प्रकार दी गई कि प्रत्येक समिति के सदस्य प्रस्तावित प्रबंधन दृष्टिकोण एवं कार्यान्वयन में अपनी भूमिका को स्पष्ट और व्यापक रूप से समझ सकें।

मत्स्यजीवी सदस्य श्री सियाराम पाडवी ने कई महत्वपूर्ण विकासात्मक चिंताएँ उठाईं, जिनमें आइस प्लांट की सुविधा का अभाव, मछली विपणन के लिए लंबी दूरी की यात्रा की कठिनाइयाँ और परिवहन हेतु पर्याप्त नौकाओं की कमी शामिल थीं। श्री नुराजी पोयरा वसावे ने सरदार सरोवर जलाशय में मछली पकड़ने की दक्षता बढ़ाने के लिए गिलनेट परिचालन में मोटर चालित सहयोग के प्रावधान का अनुरोध रखा। वहीं, श्री दिनेश वसावे ने सूखी मछली विपणन श्रृंखला की चुनौतियों पर प्रकाश डाला और बताया कि पर्याप्त उत्पादन होने के बावजूद सीधा बाजार उपलब्ध न होने से प्रभावी बिक्री नहीं हो पाती।

बैठक का समापन सरदार सरोवर के तकनीकी सहायक श्री प्रकाश गवित द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ हुआ। उन्होंने सभी सहकारी सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त किया, जिन्होंने लंबी दूरी तय कर बैठक में भाग लिया और मछली पकड़ने तथा केज कल्चर गतिविधियों में आ रही समस्याओं एवं चुनौतियों को साझा किया।

Stakeholder Consultation meeting on Fisheries Management Plan of Sardar Sarovar Reservoir at Kevadiya village, Gujarat on 27th July, 2025

The ICAR-Central Institute of Fisheries Education (CIFE), Mumbai, organized a Stakeholder Consultation on Fisheries Management of the Sardar Sarovar Reservoir on 27th July, 2025, at Kevadiya, Gujarat, under the consultancy project for “Investigations on Ecological Status, Conservation, and Enhancement of Fisheries in Maharashtra's Part of Sardar Sarovar Reservoir”**,** funded by Department of Fisheries, Maharashtra. The consultation served as a platform to bring together key stakeholders dedicated to the sustainable development and effective management of the reservoir's fisheries resources**.** The primary objective of the consultation was to initiate dialogue on policy frameworks, scientific management practices, technological innovations, and cooperative engagement to enhance fish productivity and improve the livelihoods of fishes dependent on the reservoir.

The event began with a welcome address by Shri Bhadule, Joint Commissioner, Department of Fisheries, and Government of Maharashtra. He emphasized the unwavering commitment of ICAR-Central Institute of Fisheries Education (CIFE), Mumbai, to inclusive, research-based, and sustainable development of inland fisheries. Shri. Bhadule also highlighted the dedication of the Maharashtra State Fisheries Department towards the comprehensive development of fisheries and allied sectors in the Sardar Sarovar reservoir region.

This was followed by the inaugural remarks of Dr. Sukham Munilkumar, Principal Scientist, Aquaculture Division, ICAR-CIFE, Mumbai, and Principal Investigator of the consultancy project. He emphasized the pivotal role of cooperative models and supportive policies in the holistic development of reservoir fisheries. Dr. Munilkumar presented the key findings of the study conducted during the project period, providing a detailed explanation of observations related to species distribution, abundance, total stock estimation, fishing effort, and maximum sustainable yield. He also engaged with members of the cooperative societies to discuss critical fisheries management issues, including mesh size regulation and fishing ban periods, fostering informed dialogue for sustainable practices.

Shri. Kiran Padvi**,** Fisheries Development Officer, Nandurbar, highlighted the various developmental initiatives currently underway around the Sardar Sarovar reservoir. He emphasized the urgent need for upgradation of fishing boats**,** establishment of ice plants to support cold chain infrastructure, and the development of a multi-species finfish hatchery to ensure the consistent supply of quality seed. Additionally, he underscored the importance of setting up a fish collection and marketing centre dedicated to Sardar Sarovar reservoir fisheries, which would significantly improve market access and income opportunities for local fishers.

Socio-economic perspective was presented by Dr. Arpita Sharma, Head Fisheries Extension, Economics and Statistics Division, ICAR-CIFE, Mumbai highlighting the socio-economic dimensions of the fishing dependent households of Sardar Sarovar reservoir, and exploring the collaborative opportunities for enhancing fish production and livelihood resilience in the region. The consultation witnessed the active participation of 70 fish farmers, including representatives from 20 fisheries cooperative societies**,** reflecting broad grassroots involvement and the importance of participatory decision-making in reservoir management.

Dr. Karan Ramteke Senior Scientist, Fisheries Resource Management Division, ICAR-CIFE, Mumbai CoPI of the consultancy project presented an overview of the current fish stock status and harvesting potential of the Sardar Sarovar reservoir, providing valuable insights into the existing resource base and its sustainable utilization. Following this, Dr. Kapil Sukhdhane, Scientist Aquaculture Division, ICAR-CIFE, Mumbai and CoPi of the consultancy project elaborated on the future directives and strategic framework for fisheries management plans. His presentation, before all cooperative representatives, delivered in detail in order to ensure a clear and comprehensive understanding among the members of each fisheries cooperative society regarding the proposed management approaches and their roles in effective implementation.

Fisher member Shri Siyaram Padvi raised several key developmental concerns, including the lack of ice plant facilities, the challenges posed by long-distance travel for fish marketing, and the inadequate number of fishing boats available for transportation. Shri Nuraji Poyra Vasave put forth a request for the introduction of motorized support in gill net operations to enhance fishing efficiency

in the Sardar Sarovar reservoir. Shri Dinesh Vasave also highlighted the challenges in the dry fish marketing chain, noting that despite substantial production, there is a lack of direct market access for effective sales.

The meeting concluded with a Vote of Thanks delivered by Shri. Prakash Gavit, Technical Assistant, Sardar Sarovar. He expressed heartfelt gratitude to all cooperative members who travelled long distances to attend the meeting and actively shared the issues and challenges encountered in fishing and cage culture activities.

SARDAR
NARMADA
LIMITED

Glimpses of Stakeholder Consultataion